IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारतीय विदेश नीति के 75 वर्ष : नेपाल के संदर्भ में परिवर्तन व संभावनाएं

आस्था जायसवाल[1]

डॉ. अनुपमा सिंह[2]

[1] Research Scholar, Arya Kanya Degree College, University of Allahabad

[1] Assistant Professor, Arya Kanya Degree College, University of Allahabad

शोध-संक्षेपिका (Abstract)

किसी भी देश की विदेश नीति एक महत्वपूर्ण दस्तावेज होती है जो एक संप्रभु राष्ट्र से दूसरे संप्रभु राष्ट्र के रिश्तों के बारे में राष्ट्र की नीति को रेखांकित करता है किन्तु यह कोई संविधान की तरह स्थाई दस्तावेज नहीं होता है बल्कि बदलती दुनिया के साथ निरंतर परिवर्तित होता रहता है। भारत-नेपाल दोनों देशों के बीच 1850 कि.मी. से अधिक खुली साझा सीमा, आवागमन में सुगमता प्रदान करती है और यह सीमा भारत के पाँच राज्यों- सिक्किम, पश्चिम बंगाल, बिहार, उत्तर-प्रदेश एवं उत्तराखंड की सीमा से जुड़ी हुई है। भारत और चीन के मध्य नेपाल एक मध्यस्थ राज्य (बफ़र स्टेट) की भूमिका का निर्वहन करता है। भारत-नेपाल संबंधों में बीते 75 वर्षों में कई उतार-चढ़ाव आए हैं। भारत की विदेश नीति के जनक जवाहर लाल नेहरू थे। गुटनिरपेक्ष आंदोलन और पंचशील सिद्धांत इन्हीं की देन है। समय के साथ भारतीय विदेश नीति में परिवर्तन आया है। 'पंचशील' में शांतिवाद ही मुख्य स्तम्भ था किन्तु भारतीय जनता पार्टी की विदेश नीति का दस्तावेज "पंचामृत" है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पंचामृत के अंतर्गत सम्मान, संवाद, समृद्धि, सुरक्षा और संस्कृति एवं सभ्यता को भारतीय विदेश नीति का स्तम्भ माना है। भारत-चीन के मध्य नेपाल एक बफ़र स्टेट है इसलिए नेपाल के साथ संबंध सुधारना हमारे लिए कोई विकल्प नहीं बल्कि एक अनिवार्यता है।

KEYWORD - भारत-नेपाल संबंध, विदेश नीति, पंचामृत, नेपाल, बफ़र स्टेट, सीमा विवाद।

[1] Research Scholar, Arya Kanya Degree College, University of Allahabad
Email id- jaiswalastha244@gmail.com

[2] Assistant Professor, Arya Kanya Degree College, University of Allahabad

परिचय

1947 में जब भारत देश स्वतंत्र हुआ, तो अधिकांश राजनीतिक वैज्ञानिकों और टिप्पणीकारों को बहुत कम उम्मीद थी कि यह विशाल देश एकजुट रहेगा, लोकतान्त्रिक सरकार बनाए रखना तो दूर की बात है। नेपाल के साथ भारत के प्राचीन काल से ही अच्छे संबंध रहे हैं। भारत-नेपाल के मध्य खुली साझा सीमा होने के कारण दोनों के संबंध अन्य पड़ोसी देशों की अपेक्षा अधिक घनिष्ठ व आत्मीय रहे हैं।[3] भारत हमेशा से ही शांतिपूर्ण सहअस्तित्व को लेकर चलने वाली विदेश नीति का पक्षधर रहा है। भारतीय विदेश नीति आदर्शवाद, गांधी जी के सत्य-अहिंसा के विचारों, पड़ोसी पहले की नीति, पंचशील, गुटनिरपेक्षता आदि सिद्धांतों पर आधारित रही है। आज वर्तमान में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी पंचामृत, नेबरहुड फर्स्ट, HIT आदि नीतियों को भारतीय विदेश नीति का आधार बना रहे हैं। भारत-नेपाल दोनों ही देशों के मध्य आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक आदि कई क्षेत्रों में सहयोग की संभावना है। भारत-चीन के मध्य तनावपूर्ण संबंधों के कारण यह जरूरी हो जाता है कि हम भारत के नेपाल के साथ संबंधों में पहले से अधिक घनिष्ठता लाने का प्रयास करें क्योंकि नेपाल भारत-चीन के बीच एक बफ़र स्टेट है इसलिए भारत को डर है कि चीन द्वारा नेपाल की भूमि का प्रयोग भारत के खिलाफ किया जा सकता है। यही कारण है कि सुरक्षा की दृष्टि से नेपाल भारत के लिए हमेशा से ही महत्वपूर्ण रहा है और आगे भविष्य में भी रहेगा।

प्रस्तुत पेपर का उद्देश्य और शोध-प्रविधि

इस पेपर का उद्देश्य यह बताना है कि भारत व चीन के बीच एक बफ़र स्टेट की भूमिका में होने के कारण सुरक्षा की दृष्टि से नेपाल भारत के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत पेपर पड़ताल करता है कि आखिर वे क्या कारण हैं जिनकी वजह से ऐतिहासिक व धार्मिक रूप से इतनी घनिष्ठता से जुड़े भारत-नेपाल के मध्य हाल ही में सीमा विवाद सहित कई अन्य मतभेद उत्पन्न हो गए हैं। ऐसे में यह पेपर इस बात का अध्ययन करता है कि हम किन सकारात्मक कदमों द्वारा दोनों देशों के मध्य संबंधों को और मधुर बना सकते हैं।

प्रस्तुत पेपर के अध्ययन में ऐतिहासिक, वर्णात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है। इस पेपर के अध्ययन हेतु प्राथमिक व द्वितीयक स्रोतों का प्रयोग किया गया है जिसमें प्राथमिक स्रोत के अंतर्गत नीति दस्तावेज, आधिकारिक बयान और नीति निर्माताओं के साक्षात्कार आदि शामिल है। वहीं द्वितीयक स्रोतों के अंतर्गत इस पेपर के विषय से संबंधित विभिन्न प्रतिष्ठित लेखकों की प्रमुख पुस्तकों एवं लेखों को सम्मिलित और विश्लेषित किया गया है साथ ही साथ शोध-पत्रों, समाचारपत्रों, इंटरनेट आदि का भी यथा संभव प्रयोग किया गया है।

साहित्य की समीक्षा

आज भारत और नेपाल दो सर्व-सत्ता सम्पन्न संप्रभु राष्ट्र हैं। दोनों देशों की अपनी सुनिश्चित भौगोलिक सीमाएं हैं और स्वायत्तशासी सरकारें है, परंतु जब हम दोनों राष्ट्रों के प्राचीन इतिहास का अध्ययन करते हैं तो दोनों देशों के मध्य यह भेद समाप्त हो जाता है। दोनों ही जगह एक ही समाज दिखाई पड़ता है, जिनमें आज की राजनीतिक सीमाएं लुप्त हो जाती हैं। कौटिल्य ने अपने 'अर्थशास्त्र' में नेपाल की इन वस्तुओं का उल्लेख किया है- *अष्टालोतिसंघात्या कृष्णाभिक्तिगसी वर्षवारणमपासारक इति नेपालकम्* // नेपाल के विद्वानों ने भी अशोक के संबंध पाटन तथा लुम्बिनी से स्वीकार किए हैं। इसके बाद गुप्तकाल में समुद्रगुप्त की प्रयाग

[3] हंसराज, "भारत नेपाल खुली सीमा : एक चुनौती", परिपेक्स- इंडियन जर्नल ऑफ रिसर्च , वॉल्यूम-7,2018.

प्रशस्ति में भी नेपाल, कामरूप और कतृपुर आदि को गुप्त साम्राज्य का राज्य बताया गया है(Verma, 2015)।[4] भारत एवं नेपाल धार्मिक दृष्टि से एकात्मक देश हैं और भारत-नेपाल के धार्मिक केंद्र दोनों देशों के मतावलंबियों को आकर्षित करते रहे हैं(Singh, 2015)। चीन का उदय भारत-नेपाल संबंधों हेतु सबसे बड़ी घटना है। चीन ने हिन्द महासागर और दक्षिण एशियाई क्षेत्र में अपने सुरक्षा और रणनीतिक हितों की पूर्ति हेतु वहाँ अपनी आर्थिक शक्ति प्रदान करने का भी प्रयास किया है(Sahu, 2015)।[5] नेहरू से लेकर मोदी तक सभी प्रधानमंत्रियों ने भारत की महान शक्ति का दर्जा स्थापित करने का प्रयास किया परंतु घरेलू आर्थिक और सुरक्षा चुनौतियों ने उनके प्रयासों की पूर्ति में बाधा डाली। आगे चलकर, भारतीय कूटनीति का भार देर-सवेर आंतरिक स्थिरता और समृद्धि पर ही निर्भर करेगा(Pande, 2022)।[6] भारत और नेपाल सात दशकों से अधिक समय से शांति से रह रहे हैं, और 1950 की शांति और मित्रता संधि दोनों देशों के मध्य गहरे राजनयिक संबंधों का अग्रणी प्रस्तावक रही है। वैश्वीकृत दुनिया में नेपाल के विदेशी संबंध विशेष रूप से चीन के साथ, केवल भारत की सुरक्षा द्वारा निर्देशित नहीं हो सकते हैं(Gupta, 2021)।[7] पिछले एक दशक में भारत की विदेश नीति क्षमता में बहुत अधिक वृद्धि नहीं हुई है, विशेषकर इसलिए क्योंकि विदेश सेवा का आकार उल्लेखनीय रूप से नहीं बढ़ा है। ऐसा लगता है कि भारत की नीति क्षमता इसके बढ़ते अंतर्राष्ट्रीय लक्ष्यों और महत्वाकांक्षाओं के साथ संतुलन से बाहर है(Bajpai & Chong, 2019)।[8]

नेपाल की राजनीति लंबे समय से अस्थिर ही रही है ऐसे में नेपाल का भविष्य क्या होगा, यह स्पष्ट नहीं है। इन्हीं राजनीतिक अस्थिरताओं के कारण नेपाल भी धीरे-धीरे वैश्विक आतंकवाद का एक गढ़ बनता जा रहा है। ऐसी स्थिति में भारत को नेपाल के सुरक्षा एवं उसकी स्थिरता हेतु उसका सहयोग करना चाहिए और साथ ही बिना किसी भेदभाव के नेपाल की सहायता करनी चाहिए(Mishra, 2015)।[9]

---

[4] Verma, T. P. (2015). भारत-नेपाल के प्राचीन संबंध. शोध संचयन, *6*(2), 37–43.

[5] Sahu, A. K. (2015). Future of India–Nepal relations: Is China a factor? *Strategic Analysis*, *39*(2), 197–204. https://doi.org/10.1080/09700161.2014.1000670

[6] Pande, A. (2022). Introduction: India at 75. *The Round Table The Commonwealth Journal of International Affairs*, *111*(3), 263–274. https://doi.org/10.1080/00358533.2022.2082681

[7] Gupta, R. (2021). India's Nepal Policy (1950-2020) and Globalisation in Nepal: Challenges within and from China. *Glocalism: Journal of Culture, Politics and Innovation*, *2021*(1), 1–49. https://glocalismjournal.org/indias-nepal-policy-1950-2020-and-globalisation-in-nepal-challenges-within-and-from-china/

[8] Bajpai, K., & Chong, B. (2019). India's Foreign Policy Capacity. *Policy Design and Practice*, *2*(2), 137–162. https://doi.org/10.1080/25741292.2019.1615164

[9] Mishra, S. K. (2015). नेपाल में गहराता राजनीतिक संकट एवं भारत. *संगोष्ठी रिपोर्ट*.

भारत-नेपाल संबंध

नेपाल मध्य हिमालय क्षेत्र के दक्षिणी ढालों पर स्थित है। नेपाल पूर्व से पश्चिम 830 किमी. लंबाई तथा औसत 160 किमी. चौड़ाई में फैला भारत का पड़ोसी एवं भूमिबद्ध देश है। इसके उत्तर में तिब्बत और दक्षिण में भारत है। दोनों देशों के बीच 1850 किमी. से अधिक खुली साझा सीमा, आवागमन में सुगमता प्रदान करती है और यह सीमा भारत के पांच राज्यों - सिक्किम, पश्चिम बंगाल , बिहार, उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड की सीमा से जुडी हुई है। **सुगौली की संधि, 1816** के अनुसार नेपाल देश की सीमाओं का सीमांकन नदियों द्वारा किया गया है। यह संधि नेपाल के गोरखा साम्राज्य और ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के बीच दो सालों तक चलने वाले युद्ध के बाद हुई। इसके अंतर्गत यह चिन्हित किया गया था कि पश्चिमी तरफ काली नदी सीमा चिन्हित करेगी जबकि पूर्वी तरफ मेची नदी सीमा होगी। पड़ोसी देशों में भारत के सबसे घनिष्ठ एवं आत्मीय सम्बंध नेपाल के साथ जुड़े हुए हैं। दोनों ही देश एक साझी सामाजिक-सांस्कृतिक विरासत के हिस्सेदार भी हैं।

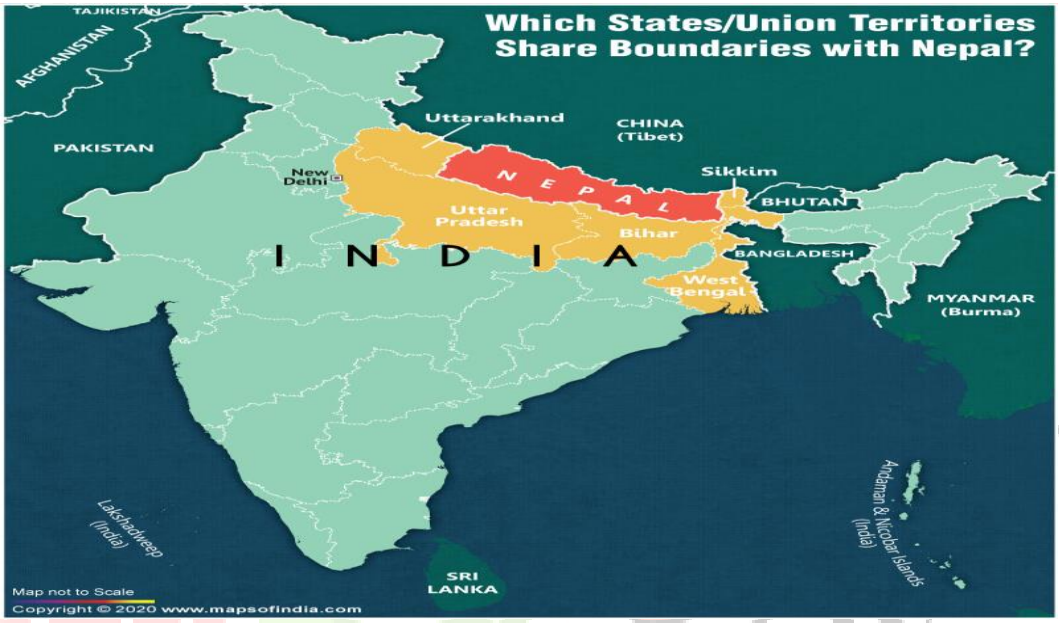

[10]

- **वर्ष 1950 की "भारत-नेपाल शांति और मित्रता संधि"** वर्तमान में दोनों देशों के बीच विशेष संबंधों का आधार है। इस संधि के निम्नलिखित प्रावधान थे-
  - **i.** दोनों देश किसी विदेशी आक्रमण के समय एक-दूसरे की रक्षा करेंगे।
  - **ii.** सामान्य रूप से नेपाल अपने लिए युद्ध सामग्री भारत से खरीदेगा तथा किसी अन्य देश से युद्ध सामग्री खरीदने से पहले नेपाल, भारत से परामर्श करेगा।
  - **iii.** तिब्बत, नेपाल और भूटान के मध्य दर्रों पर भारत और नेपाली सैनिक संयुक्त रूप से नियुक्त किए जाएंगे।
  - **iv.** नेपाली सेना के संगठन और प्रशिक्षण के लिए एक भारतीय सैनिक मिशन को काठमांडू में स्थापित किया जाएगा।
  - **v.** इसी संधि के अंतर्गत नेपालियों को भारत में कार्य करने तथा रोजगार प्राप्त करने की सुविधा प्रदान की गई है।

वर्तमान में इस संधि को नेपाल द्वारा रद्द करने की मांग हो रही है।

[10] https://www.mapsofindia.com/answers/geography/which-states-share-boundaries-with-nepal/ (Accessed on 19 August 2023)

- **भारत-नेपाल सीमा विवाद-**

अभी हाल ही में भारत और नेपाल के बीच एक 338 किमी. की पट्टी को लेकर सीमा विवाद उत्पन्न हुआ था। वह पट्टी भारत, नेपाल और चीन के बीच ट्राईजंक्शन पर स्थित है। इसी ट्राईजंक्शन क्षेत्र में लिम्पियाधुरा दर्रा, लिपुलेख और कालापानी स्थित हैं। 8 मई 2020 को **भारत के रक्षामंत्री राजनाथ सिंह** ने धारचुला से चीन की सीमा लिपुलेख तक एक सड़क का उद्घाटन किया था जिसके विषय में नेपाल का दावा है कि यह सड़क उसके क्षेत्र से होकर गुजरी है। नेपाल ने 22 मई, 2020 को अपना नया राजनीतिक नक्शा जारी किया जिसमें उत्तराखंड के **"लिपुलेख, कालापानी और लिम्पियाधुरा क्षेत्र"** और बिहार के पश्चिम चंपारण के **"सुस्ता क्षेत्र"** को नेपाल का अभिन्न अंग बताया है जो भारत और नेपाल के बीच वर्तमान विवाद का मुख्य कारण है।[11]

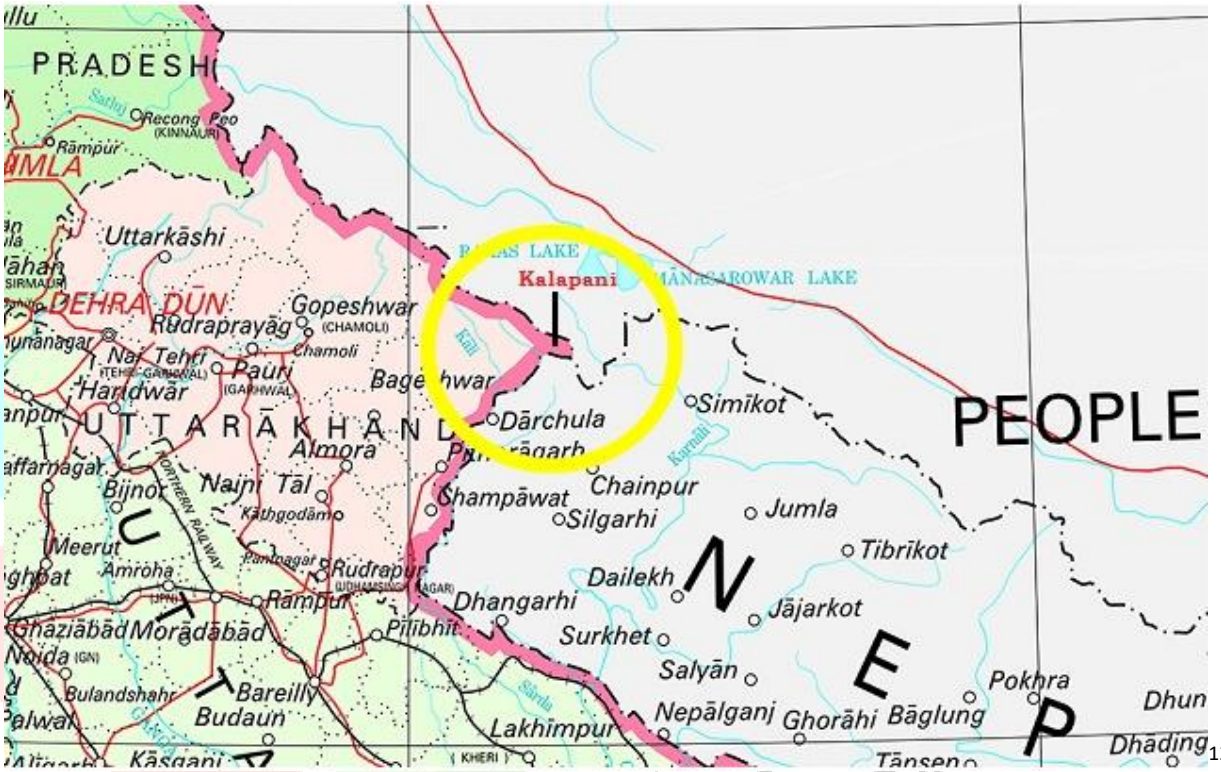

[12]

नेपाल के रक्षामंत्री ईश्वर पोखरेल ने **"Rising Nepal"** को दिए गए इंटरव्यू में कहा कि *"अगर जरूरत पड़ी तो नेपाल की सेना भारत से लड़ने के लिए तैयार है।"* कालापानी में इंडो-तिब्बत बॉर्डर पर भारत की ही पुलिस तैनात है। पूरे विवाद पर **भारत के सेना प्रमुख मनोज मुकुंद नरवणे** ने कहा है कि *"नेपाल चीन की शह के कारण सरहद पर काल्पनिक दावा कर रहा है।"*

श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में राष्ट्रीय लोकतान्त्रिक गठबंधन(एन.डी.ए.) मई 2014 में संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन को लोकसभा के सामान्य चुनाव में हरा कर सत्ता में आया। नरेंद्र मोदी की लहर के बाद कुछ मीडिया ने मोदी को *'भारत का शिन्जों आबे'* कहा तो वहीं पश्चिमी मीडिया ने उन्हें *'भारतीय पुतिन'* की संज्ञा दी। बहुत से विदेशी मीडिया विश्वास करते हैं कि मोदी *'भारतीय Deng Xiaoping'* के रूप में उभरेंगे

[11] https://navbharattimes.indiatimes.com/state/uttarakhand/other-cities/villages-of-kalapani-nepal-eyes-have-scripted-success/articleshow/76438838.cms (Accessed on 20 August 2023)
[12] https://www.drishtiias.com/daily-updates/daily-news-analysis/india-nepal-border-dispute/print_manually (Accessed on 05.01.2023)

परंतु यह समय बताएगा कि मोदी पर कौन-सी संज्ञा सबसे उपयुक्त सिद्ध होगी। मोदी के नेतृत्व में एन.डी. ए. पुनः सत्ता में आ गया और मोदी अपने प्रधानमंत्री के दूसरे कार्यकाल में भारत की विदेश-नीति को नया आकार दे रहे हैं।

भारतीय विदेश नीति में परिवर्तन

स्वतंत्रता के बाद से लेकर अब तक भारतीय विदेश नीति में काफी बदलाव आए हैं। जहां पहले हम नेहरू जी के काल में थोड़ा आदर्शवादी थे, मिश्रित अर्थव्यवस्था प्रणाली को अपनाए थे वहीं इंदिरा गांधी जी के काल में भारतीय विदेश नीति का झुकाव यथार्थवाद की तरफ हुआ। 1962 में भारतीय सीमा पर चीनी सीमा के आक्रमण ने हमारे विदेश विदेश नीति निर्माताओं को रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण हिमालायी साम्राज्य को आंतरिक और बाहरी तोड़फोड़ से बचाने के लिए और अधिक सतर्क कर दिया(Shukla, 2006)।[13] 70 के दशक में भारत ने पाकिस्तान को हराकर बांग्लादेश बनाने में मदद की थी और अमेरिका का पलड़ा पाकिस्तान के लिए ज्यादा झुका रहता था। इसकी एक वजह यह भी थी कि अमेरिका पाकिस्तान के एयरबेस का इस्तेमाल सोवियत संघ के खिलाफ कर रहा था। इंदिरा गांधी के समय में ही भारत ने **18 मई 1974 पहला पोखरण परमाणु परीक्षण** किया। इसके बाद दुनिया में भारत पहला ऐसा देश बन गया था जिसने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का सदस्य न होते हुए भी परमाणु परीक्षण करने का साहस किया।[14] इंदिरा गांधी की नेपाल यात्रा में नेपाल ने यह बता दिया था कि वह मुख्य रूप से आर्थिक मुद्दों, विशेष रूप से व्यापार और पारगमन पर 1960 की संधि के कार्यान्वयन, भारत में नेपाल के निर्यात पर भारतीय रुपये के अवमूल्यन के प्रभाव और नेपाल के लिए भारत से संभावित सहायता पर चर्चा करने के लिए इस यात्रा की प्रतीक्षा कर रहा है।[15] 1975 में सिक्किम राज्य का भारत में विलय हो गया और तब चीन कहने लगा कि अगला नंबर नेपाल का ही है। एक आधिकारिक बयान जारी हुआ जिसमें कहा गया कि 'यह विलय नहीं बल्कि कार्रवाई है'। सिक्किम ने नेपाल को शांति क्षेत्र के रूप में मान्यता देने का प्रस्ताव रखा जहां सैन्य प्रतिस्पर्धा सीमा से बाहर होगी। चीन और पाकिस्तान ने प्रस्ताव का समर्थन किया लेकिन भारत ने इनकार कार दिया। नेपाल ने बार-बार प्रस्ताव पर जोर दिया और अंततः इस मुद्दे को एक अंतर्राष्ट्रीय मंच पर उठाया। संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन और फ़्रांस सहित 112 देशों का समर्थन प्राप्त करने में कामयाब रहा लेकिन भारत इनकार करने पर अड़ा रहा।[16] दोनों देशों के मध्य रिश्ते तब और खराब हो गए जब 1988 में दो व्यापार संधियाँ नवीनकरण के लिए थी और नेपाल ने एकल व्यापार पारगमन की भारत की मांग को स्वीकार करने से इनकार कर दिया। नेपाली नेताओं ने इस स्थिति पर जोर दिया कि संयुक्त राष्ट्र चार्टर के अनुसार, पारगमन विशेषाधिकार □भूमि से घिरे देश का एक मौलिक अधिकार और स्थायी अधिकार□ था और इस प्रकार एकल संधि के लिए भारत की मांग अस्वीकार्य थी। आर्थिक प्रतिबंधों ने नेपाल को बुरी तरह प्रभावित किया, भारत ने भी ऋण सहायता रद्द कर दी और नेपाल ने भी भारतीय रुपये को अलग करके इसका जवाब दिया, जिसे वहाँ स्वतंत्र रूप से

[13] Shukla, D. (2006). India-Nepal Relations : Problems And Prospects. *The Indian Journal of Political Science*, *67*(2), 355–374. https://doi.org/http://dx.doi.org/10.2307/41856222

[14] https://ndtv.in/india/india-tested-first-nuclear-bomb-on-18-may-1974-at-pokhran-1695051 (Accessed on 16 August 2023)

[15] https://www.epw.in/journal/1966/9/weekly-notes-uncategorised/indira-gandhi-nepal.html (Accessed on 16 August 2023)

[16] https://timesofindia.indiatimes.com/readersblog/editorspeaks/a-relationship-gone-wrong-an-insight-of-india-nepal-relations-22361/ (Accessed on 18 August 2023)

स्वीकार किया गया। नेपाल अधिक समय तक अपनी स्थिति बरकरार नहीं रख सका क्योंकि उसकी जीडीपी 1988 में 9.7% से गिरकर 1.5% हो गई। नेपाल को उच्च टैरिफ, सीमा बिंदुओं के बंद होने और तनावपूर्ण राजनीतिक माहौल से आर्थिक रूप से नुकसान उठाना पड़ा। 988 में नेपाल में की सरकार द्वारा चीनी हथियार हासिल करने की कोशिश ने भी दोनों देशों के मध्य संबंध में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

- **वर्ष 1970 के दशक में भारत और नेपाल के सम्बंध निम्नलिखित कारणों से खराब हुए-**
  - **i.** भारत द्वारा नेपाल में लोकतान्त्रिक शक्तियों को दिया जा रहा समर्थन।
  - **ii.** वर्ष 1971 का भारत एवं पाकिस्तान का युद्ध।
  - **iii.** वर्ष 1974 में भारत का पोखरण परमाणु विस्फोट।
  - **iv.** वर्ष 1975 में सिक्किम का भारत में विलय। (इसके बाद चीन कहने लगा कि अगला नंबर अब नेपाल का है।)

परिणामस्वरूप वर्ष 1975 में नेपाल ने स्वयं को शांति क्षेत्र घोषित करने की मांग की। वर्ष 1990 के बाद के शीत युद्धोत्तर युग में नेपाल में माओवाद के बढ़ते प्रभाव से भारतीय सुरक्षा के लिए नई चुनौती उत्पन्न हुई क्योंकि माओवादियों का दृष्टिकोण भारत विरोधी रहा है। भारत एवं नेपाल के बीच खुली सीमा भी सुरक्षा के लिए नई चुनौती बनने लगी है क्योंकि सीमावर्ती क्षेत्रों में आई. एस. आई. की गतिविधियां बढ़ने लगीं तथा हथियारों की तस्करी एवं नकली नोटों का अवैध व्यापार भी बढ़ने लगा। वर्ष 1999 में काठमांडू से इंडियन एयरलाइन्स के विमान का अपहरण कर लिया गया। 1990 के पश्चात भारत ने प्रधानमंत्री पी. वी. नरसिंहा राव जी के समय में उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण को अपनाया।

- **भारत की नेबरहुड फर्स्ट नीति**

  इस नीति के तहत भारत अपने सभी पड़ोसी देशों के साथ मैत्रीपूर्ण और पारस्परिक रूप से लाभप्रद संबंध विकसित करने के लिए प्रतिबद्ध है। यह नीति स्थिरता और समृद्धि के लिए पारस्परिक रूप से लाभप्रद, जन-उन्मुख, क्षेत्रीय ढांचे के निर्माण पर केंद्रित है।

- **पंचामृत**

  प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने पंचामृत[17] के अंतर्गत निम्न पाँच को भारतीय विदेश नीति का स्तम्भ माना है-

  1) सम्मान
  2) संवाद
  3) समृद्धि
  4) सुरक्षा
  5) संस्कृति एवं सभ्यता

- **भारत-नेपाल उच्च स्तरीय दौरा**

  हाल ही में भारतीय प्रधानमंत्री ने बुद्ध की जन्मस्थली लुम्बिनी, नेपाल का दौरा किया, जहां उन्होंने भारतीय सहायता से बनाए जा रहे बौद्ध विहार की नेपाली प्रधानमंत्री के साथ आधारशिला रखी।

[17] https://pratiyogitatoday.com/modi-ki-panchamrit-videsh-niti/ (Accessed on 20 August 2023)

- **HIT फॉर्मूला**

  नेपाली संसद को संबोधित करते हुए श्री मोदी ने नेपाल को 10,000 करोड़ रुपये की ऋण सहायता देने की घोषणा की। उन्होंने जलविद्युत की अपार क्षमता वाले नेपाल के विकास के लिए HIT फार्मूला दिया।[18]

  - **H** – Highway
  - **I** – I-ways (Information Technology)
  - **T** – Transways (Transmission Lines for electricity)

- **जल विद्युत परियोजनाएं**

  दोनों देशों ने 490.2 मेगावाट के **अरुण-4 जलविद्युत परियोजना** के विकास और कार्यान्वयन के लिए सतलुज जल विद्युत निगम लिमिटेड और नेपाल विद्युत प्राधिकरण के बीच पाँच समझौतों पर हस्ताक्षर किए। नेपाल ने भारतीय कंपनियों को नेपाल में पश्चिम **सेती जल विद्युत परियोजना** में निवेश करने के लिए भी आमंत्रित किया।

- **कोरोना महामारी के दौरान भारत-नेपाल संबंध**

  शुरुआती समय में भारत ने पड़ोसी देश नेपाल को लगभग **वैक्सीन की 10 लाख खुराक दी थी** और उनमें से करीब चार लाख लोगों को वैक्सीन की दोनों खुराक मिल चुकी है। इसके अलावा विश्व स्वास्थ्य संगठन की ग्लोबल वैक्सीन शेयरिंग प्रोग्राम **कोवैक्स** के तहत चीन से भी नेपाल को वैक्सीन मिल चुकी है। उस दौरान नेपाल के तत्कालीन प्रधानमंत्री **के. पी. शर्मा ओली** ने ये कहा था कि खुली सीमा होने के कारण नेपाल में कोरोना भारत से फैला है। उनका यह वक्तव्य यह बताता है कि दोनों देशों के मध्य कहीं न कहीं पारस्परिक विश्वास की कमी हो गई है। नेपाल के अखबार **'द काठमांडू पोस्ट'**_में 10 अप्रैल को छपी एक रिपोर्ट के अनुसार भारत की ओर से निर्यात बंद होने के कारण टीकाकरण अभियान को रोक दिया गया है। **'अंग्रेजी अखबार द हिन्दू'**_ने **नेपाली विदेश मंत्री प्रदीप ज्ञवाली** की ओर से बताया गया कि अगर भारत ने जल्दी वैक्सीन नहीं दी तो नेपाल में बुजुर्गों को वैक्सीन देना मुमकिन नहीं होगा। सीमा विवादों पर के.पी. शर्मा ओली ने कहा □अब गलतफहमियाँ या नासमझी हट गई है, हमें चाहिए कि भविष्य को देखें और आगे बढ़ें साथ ही हमको नकारात्मक पहलुओं को नहीं बल्कि सकारात्मक पहलुओं को आगे बढ़ाना है□।

  क्षेत्रीय विवादों के लिए संवाद का प्रयोग, आर्थिक संबंधों को मजबूत करने और नेपाल में भारत के निवेश में वृद्धि होने तथा नेपाल के प्रति संवेदनशीलता रखने से भारत नेपाल संबंधों में मधुरता की संभावनाएं संभव है। भारत की वर्तमान विदेश नीति की सबसे खास विशेषता यह है कि इसमें पूर्व की सभी नीतियों की अपेक्षा जोखिम लेने की प्रवृत्ति सबसे अधिक है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत कुछ हद तक आदर्शात्मक और सुरक्षात्मक नीति को अपनी विदेश नीति के रूप में अपनाए हुए था परंतु वर्तमान में भारत कई दशकों पुरानी सुरक्षात्मक नीति को बदलते हुए आक्रामक नीति की ओर अग्रसर हो रहा है। भारत द्वारा **डोकलाम में कार्रवाई** और वर्ष 2016 में उरी आतंकी हमलों के बाद पाकिस्तान के खिलाफ **सर्जिकल स्ट्राइक** भारतीय विदेश नीति के बदलते आयाम का प्रमुख उदाहरण हैं। कई विद्वानों का मानना है कि भारत की वर्तमान विदेश नीति में विचारों और कार्रवाई की स्पष्टता दिखाई देती है। भारत ने अपनी विदेश नीति में संतुलन बनाए रखने का एक महत्वपूर्ण कार्य किया है और अमेरिका तथा रूस के साथ भारत के संबंध इस तथ्य के प्रमुख उदाहरण हैं।[19]

[18] https://www.narendramodi.in/hi/prime-minister-shri-narendra-modi-enthralled-nepal-by-his-visit-6427 (Accessed on 19 August 2023)

[19] https://www.drishtiias.com/hindi/daily-updates/daily-news-editorials/indian-foreign-policy (Accessed on 20 August 2023)

वर्तमान समय में चीन का शांतिपूर्ण उभार और चीन द्वारा नेपाल तक रेल लाइन बिछाने की योजना, चीन की दूरगामी रणनीति का परिणाम है। अतः नेपाल का भारतीय सुरक्षा के लिए अत्यधिक महत्व है।

Bajpai, K., & Chong, B. (2019). India's Foreign Policy Capacity. *Policy Design and Practice*, *2*(2), 137–162. https://doi.org/10.1080/25741292.2019.1615164

Gupta, R. (2021). India's Nepal Policy (1950-2020) and Globalisation in Nepal: Challenges within and from China. *Glocalism: Journal of Culture, Politics and Innovation*, *2021*(1), 1–49. https://glocalismjournal.org/indias-nepal-policy-1950-2020-and-globalisation-in-nepal-challenges-within-and-from-china/

Mishra, S. K. (2015). नेपाल में गहराता राजनीतिक संकट एवं भारत. In *संगोष्ठी रिपोर्ट*.

Pande, A. (2022). Introduction: India at 75. *The Round Table The Commonwealth Journal of International Affairs*, *111*(3), 263–274. https://doi.org/10.1080/00358533.2022.2082681

Sahu, A. K. (2015). Future of India–Nepal relations: Is China a factor? *Strategic Analysis*, *39*(2), 197–204. https://doi.org/10.1080/09700161.2014.1000670

Shukla, D. (2006). India-Nepal Relations : Problems And Prospects. *The Indian Journal of Political Science*, *67*(2), 355–374. https://doi.org/http://dx.doi.org/10.2307/41856222

Singh, K. (2015). भारत एवं नेपाल की धार्मिक एकात्मकता□: एक ऐतिहासिक अध्ययन (नेपाली संस्कृत अभिलेखों के संदर्भ में). शोध संचयन, *6*(2), 25–26.

Verma, T. P. (2015). भारत-नेपाल के प्राचीन संबंध. शोध संचयन, *6*(2), 37–43.